20/07/19

Q.1 V.V.I.

परिवार की भूमिका अनौपचारिक शिक्षा की साधनता में।

⇒ परिवार की भूमिका आज से नहीं, बल्कि प्राचीन काल से ही बालकों के विकास में सराहनीय रही है परिवार में ही बालक अपने जीवन का प्रथम अध्याय सीखता है यह बालकों के शिक्षा के अनौपचारिक अभिकरण (साधन) में

(1) ⇒

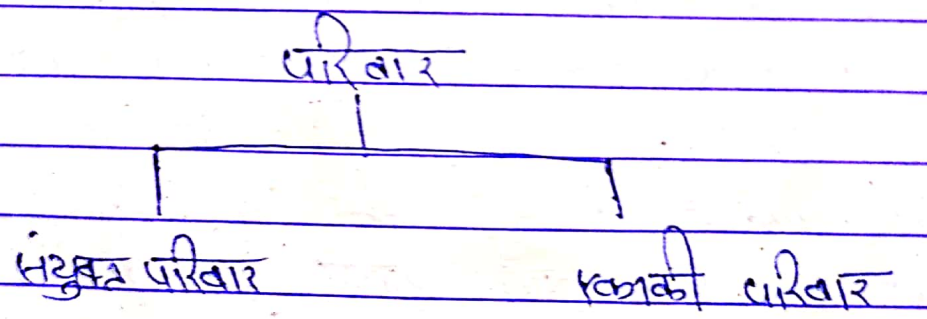

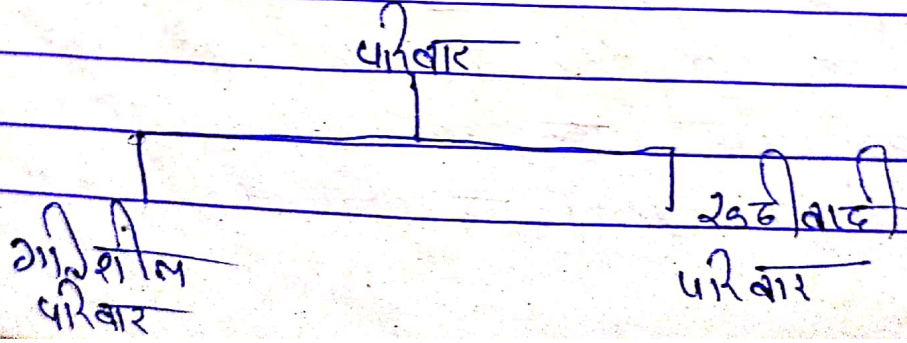

(2)

Scanned with CamScanner

ANKIT
Date
Page

(1)

(i) संयुक्त :→

यह परिवार ऐसे परिवार से है जहाँ दादा-दादी, चाचा-चाची, बुआ तथा माता-पिता एवं उनकी संतान एक छत के नीचे रहते हैं और साथ ही उनके कार्यों एवं उत्तरदायित्वों का वितरण संयुक्त रूप किया जाता है

(ii) एकाकी परिवार :-

एकाकी परिवार में माता-पिता तथा उनकी संतानें एक-साथ एक छत के नीचे रहते है आर्थिक गतिविधियों के प्रचलन के कारण भारत में इस प्रकार के परिवारों का प्रचलन बढ़ रहा है

(2) (i) गतिशील परिवार :-

ऐसे परिवार से होते है जो समय के साथ-साथ बदलते रहते हैं इस परिवार में आधुनिकरण की प्रवृति देखी जाती है एक पुरातन मूल्य एवं आदर्शों के स्थान पर नवीन प्रतिमानों की स्थापना करते हैं

(ii)

रूढ़िवादी परिवार :-

यह परिवार वे परिवार है जो सामाजिक परिवर्तन तथा आधुनिकीकरण के प्रवृति को सरलता से नहीं अपनाते है यह परिवार वर्षों से चली आ रही परम्पराओं तथा रूढ़ियों को ढोते रहते है

इस प्रकार परिवार की प्रकृति जैसी भी हो वह व्यक्ति के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है परिवार का परिवेश पर बच्चा का भविष्य निर्भर करता है क्योंकि बालक में अनुकरण की सहज प्रवृति पायी जाती है। इसके कारण वो बड़ो का अनुकरण करता है यदि पारिवारिक वातावरण में बालक बालिकाओं के मध्य भेद-पूर्ण व्यवहार होता है तो बालक पर ही इसका सिधा प्रभाव पड़ता है परिवार में चुनौतिपूर्ण लिंग की असमानता के लिए कुछ तत्व उत्तरदायि हैं

23/07/19

(i) पारिवारिक पृष्ठभूमि :-

यह एक महत्वपूर्ण कारक है क्योंकी जो जिस परिवार से आता है उसकी सोच वैसी ही हो जाती है जैसा की पीढ़ी तथा ग्रामीण क्षेत्रीय परिवारों में लिंगीय असमानता अधिक देखने को मिलती है

(ii) अशिक्षा तथा जागरुकता की कमी :-

अनपढ़ माता-पिता और जानकारी का अभाव भी लिंगीय असमानता को बढ़ावा देती है जैसे की ग्रामीण क्षेत्रों में।

Page.4

(iii) रुढ़िवादिता :—

रुढ़िवादी परिवारो में लिंगीय असमानता अधिक पायी जाती है। इस प्रकार के परिवार स्त्री शिक्षा में महत्व और नवीन प्रतिमानों को रुढ़िवादी विचारों के कारण नहीं अपनाते है। जिससे लिंगीय असमानता ऐसे परिवारों में बढ़ती ही जाती है।

(iv) पिछड़ापन तथा गरीबी :—

यह एक महत्वपूर्ण कारण है जोकि लिंग असमानता को अपनी जीवन के दिनचर्या में शामिल कर लिया गया। जैसे की खानपान, रहन-सहन तथा शिक्षा का प्रथम अधिकार लड़को को दिया जाता है ताकी वो पढ़-लिखकर अपने आर्थिक तंगी को दूर कर सके और महिलाओं को चूल्हे-चौके तक सिमित रहते है।

(v) संतानो की अधिकता :—

यह कारक सीधी है असमानता पर प्रकाश डालती है क्योंकि घर में कमाने वाले कम रहते है और खाने अधिक रहते है। इसलिए पुरुषों के साथ-साथ महिलाओं को भी शिक्षित होना चाहिए है तभी तो हम जनसंख्या पर नियंत्रण लगाया जा सकता है जो की परिवार को दायित्व बनता है जैसे की (छोटा परिवार सुखी परिवार)

(5) सामाजिक स्थिति :-

सामाजिक रूप से और समाज में महिलाओं की स्थिति अभी भी चिंताजनक है क्योंकि उनकी स्थिति का निर्धारण लिंगीय असमानता वाले परिवार भी हैं और नहीं तो क्या।

Page 5

इस प्रकार परिवार में सक्षम उपर्युक्त कारक समाज में उपस्थित रहते हैं जिसके कारण परिवार चुनौतीपूर्ण लिंग की समानता की शिक्षा में प्रभावी भूमिका का निर्वाह नहीं कर पाता है परंतु इतना तो सत्य है कि परिवार अपनी सभी पीढ़ियों को एक अच्छा भविष्य देना चाहता है पारिवारिक अंतर्क्रिया, व्यवहार और मूल्य किसी व्यक्ति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है

Page 6

इस प्रकार चुनौतीपूर्ण लैंगिक की समानता की शिक्षा के लिए निम्नलिखित प्रयास परिवार द्वारा किया जाना चाहिए:-

(1) ⇒ गर्भावस्था में भ्रूण को जानना और भ्रूण हत्या करवाने का दबाव परिवार को नहीं देना चाहिए।

(2) ⇒ कुछ परिवार में मान्यताओं और परम्पराओं के कारण पुत्र के लिए रोते रहना और लड़कियों को उपेक्षित करना जिससे लड़कियों का मन कुण्ठित हो जाता है और वे आत्मनिर्भर नहीं बन पाती हैं।

(3) ⇒ परिवार में लड़के एवं लड़कियों दोनों को समान अधिकार मिलना चाहिए।

(4) ⇒ परिवार में लैंगिक अपमान सूचक शब्दावली का प्रयोग नहीं होनी चाहिए। क्योंकि बच्चे भी उसका अनुकरण करते हैं।

(5) ⇒ परिवार को चाहिए कि बिना किसी भेदभाव के लड़के व लड़कियों के पालन-पोषण, खान-पान, रहन-सहन एवं स्वास्थ्य पर समान ध्यान दें।

Page 5

(6) ⇒ पारिवारिक कार्यक्रमों में बालक और बालिकाओं को समान भागीदारी प्रदान करनी चाहिए ताकी रुढ़िवादी परम्परा का अंत हो।

(7) ⇒ परिवार को चाहिए की विवाह पंजीकरण तथा समाजीकरण को प्रोत्साहित करें।

(8) ⇒ पारिवारिक कुरीतियों पर रोक लगाकर एक नए रीती का पालन करें जैसे :- "हम बदलेंगे तो युग बदलेगा"

(9) ⇒ परिवार को चाहिए की प्रौढ़ शिक्षा में सहयोग करे ताकी उसके द्वारा जागरुकता आ सके समाज में।

(10) ⇒ परिवार को आपसी सहयोग के भाव का विकास करना चाहिए जिससे स्त्रियों की असमानता कम होगी।

(11) ⇒ प्रत्येक परिवार को चाहिए की वह लिंग की संस्कृति की अपेक्षा श्रम की संस्कृति को महत्व दें।

(12) ⇒ परिवार के सम्पत्ती जैसे- धंधा, व्यापार और सांस्कृतिक कलाएँ इत्यादि बालिकाओं को सिखानी चाहिए।

(13) ⇒ परिवार को बालिकाओं को भी व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करने की समुचित व्यवस्था करनी चाहिए।

Scanned with CamScanner

(14) परिवारों को चाहिए की घर में महिलाओं के विचार और इच्छा को सम्मान प्रदान करें।

(15) ⇒ परिवारों को चाहिए की जन-संचार के साधनों द्वारा जागरूकता फैलाए जिससे लिंगीय असमानता कम हो सके।

Page-8

(16) ⇒ परिवारों को चाहिए की अपनी प्रभावी भूमिका का निर्वहन हेतु सरकार द्वारा चलाई जा रही योजनाओं की सफलता में सहयोग प्रदान करें।

(17) ⇒ लिंगीय असमानता के लिए चलाए गए कार्यक्रमों के प्रति लोग परिवार के सहयोग में लाये जाना चाहिए।

(18) ⇒ परिवार को चाहिए की वे बालक और बालिकाओं में स्व अनुशासन की प्रवृत्ति तथा उत्तम ~~चरित्र~~ चरित्र और आदर्शों का विकास करें।

(19) ⇒ परिवार को बालिका शिक्षा और सुरक्षा के विषयों पर यथायोग्य सहायता प्रदान करनी चाहिए।

(20) ⇒ बालिकाओं में बचपन से ही आत्मविश्वास, नेतृत्व, साहस तथा आत्म बल जैसे गुणों का विकास परिवार द्वारा होनी चाहिए।

अतः परिवार एक महत्वपूर्ण अभिकरण है क्योंकि इससे प्रथम पाठशाला कहा

Page-9

है। और समाज को प्रथम शिक्षिका कही गई है।
प्रशिक्षित व्यक्ति के विकास में जन्म से
मृत्यु तक के परिवार की अहम भूमिका रहती है।

119